शरद् पूर्णिमा (कोजागरी पूर्णिमा)

अभिषेक कुमार मिश्रा
टीजीटी संस्कृत
डीपीएस-छतरपुर, एम.पी.

इस वर्ष आश्विन्' अधिक मास' होने के कारण आश्विन् पूर्णिमा को 'शरद् पूर्णिमा (कोजागरी पूर्णिमा)' है। आश्विन् पूर्णिमा के विविध नामों का अर्थ आश्विन् पूर्णिमा को 'शरद् (कोजागरी) पूर्णिमा', 'नवान्न पूर्णिमा' अथवा 'शरद् पूर्णिमा' के नाम से जाना जाता है। जिस दिन पूर्णिमा पूर्ण होती है, उस दिन 'नवान्न पूर्णिमा' मनायी जाती है।

अ. आश्विन् पूर्णिमा की उत्तररात्रि को लक्ष्मीदेवी 'को जाग्रतः' अर्थात 'कौन जाग रहा है ?', ऐसा पूछती हैं; इसलिए इस पूर्णिमा को 'कोजागरी पूर्णिमा' कहते हैं।

आ. किसान आश्विन पूर्णिमा को प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए नए अनाज की पूजा कर उसका भोग लगाते हैं; इसलिए इस पूर्णिमा को 'नवान्न पूर्णिमा' कहते हैं ।

इ. आश्विन् पूर्णिमा शरदऋतु में आती है; इसलिए इस पूर्णिमा को 'शरद् पूर्णिमा' कहते हैं।

पूर्णिमा तिथि दो दिन हो तो किस दिन शरद् पूर्णिमा (कोजागरी पूर्णिमा) मनानी चाहिए ?

ज्योतिषशास्त्रानुसार सूर्योदय के समय जो तिथि होती है, उसे ग्राह्य माना जाता है। हिन्दू पंचांगानुसार आश्विन् महीने में मध्यरात्रि की पूर्णिमा को शरद् पूर्णिमा (कोजागरी पूर्णिमा) मनायी जाती है। इस वर्ष 30.10.2020 को सायंकाल 5:46 बजे से 31.10.2020 की रात्रि 8:19 बजे तक पूर्णिमा तिथि है। 30.10.2020 को मध्यरात्रि पूर्णिमा होने के कारण शरद पूर्णिमा (कोजागरी पूर्णिमा) मनायी गयी है।

शरद (कोजागरी) पूर्णिमा को चंद्रमा देखने का ज्योतिषशास्त्रीय महत्त्व

इस दिन चंद्रमा पृथ्वी के सर्वाधिक निकट रहता है। इस दिन देवी लक्ष्मी और इंद्रदेवता का पूजन किया जाता है। इस कारण लक्ष्मीजी की कृपा से सुख-समृद्धि प्राप्त होती है। रात्रि को दूध में चंद्रमा का दर्शन करने से चंद्रमा की

किरणों के माध्यम से अमृत प्राप्ति होती है । 'आश्विन् पूर्णिमा' को चंद्रमा अश्विनी नक्षत्र में होता है । अश्विनी नक्षत्र के देवता 'अश्विनी कुमार' हैं । अश्विनी कुमार सर्व देवताओं के चिकित्सक हैं । अश्विनीकुमार की आराधना करने से असाध्य रोग ठीक होते हैं । इसलिए वर्ष की अन्य पूर्णिमाओं की तुलना में आश्विन् पूर्णिमा को चंद्रमा के दर्शन से कष्ट दूर होते हैं।

ज्योतिषशास्त्र में चंद्रमा ग्रह को मन का कारक माना गया है । इसलिए हमारी मानसिक भावनाएं, निराशा और उत्साह चंद्रमा से संबंधित हैं । जिनकी जन्मकुंडली में चंद्रबल न्यून होता है, उन्हें पूर्णिमा के आसपास मानसिक कष्ट होने की मात्रा बढ़ती है ।जिनकी जन्मकुंडली में चंद्रमा का बल अच्छा है, उनकी प्रतिभा पूर्णिमा के चंद्रमा,चांदनी के वातावरण में जाग्रत होती है ।

उत्सव मनाने की पद्धति (लक्ष्मी तथा इंद्र की पूजाविधि)

इस दिन नवान्न (नए पके हुए अनाज की) रसोई बनायी जाती है । श्रीलक्ष्मी तथा ऐरावत पर आरूढ इंद्र की पूजा रात्रि के समय की जाती है । पूजा के उपरांत पोहे तथा नारियल पानी देव तथा पितरों को समर्पित करने के पश्चात् नैवेद्य के रूप में घर के सभी उपस्थित सदस्य ग्रहण करते हैं । शरद ऋतु की पूर्णिमा पर चांद की रोशनी में गाढा दूध बना कर चंद्र को उसी का नैवेद्य दिखाया जाता है । उसके पश्चात् नैवेद्य के रूप में वही दूध ग्रहण किया जाता है । इस दूध में स्थूल तथा सूक्ष्म रूप से चंद्र का रूप तथा तत्त्व आकर्षित होता है । चंद्र के प्रकाश में एक प्रकार की आयुर्वेदिक शक्ति रहती है । अतःयह दूध आरोग्यदायी होता है । इस रात्रि को जागरण करते हैं । मनोरंजन हेतु विभिन्न प्रकार के खेल खेले जाते हैं। जागरण के बीच रात्रि में लक्ष्मी चंद्रमंडल से भूतल पर आती है तथा जो जागृत होगा, उस पर संतुष्ट होकर उसे कृपाशीर्वाद देकर जाती है । अतः कोजागरी को रात्रिजागरण किया जाता है । आश्विन् पूर्णिमा को चंद्रमा को साक्षी मान कर माता कृतज्ञता भाव से अपनी ज्येष्ठ संतान की आरती उतारती है; क्योंकि प्रथम संतान के जन्म के पश्चात् स्त्री को मातृत्व का आनंद प्राप्त होता है ।'